एकात्म मानववाद और समावेशी विकास

***डॉ. अनिल कुमार,**
असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, श्री बजरंग पी. जी. कॉलेज, दादर आश्रम, सिकंदरपुर, बलिया, उत्तर प्रदेश

Abstract

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी अपने एकात्म मानववाद के दर्शन में मुख्य रूप से कृषि विकास, ग्रामीण विकास, विकेंद्रीकरण, स्वदेशी, अंत्योदय और आत्मनिर्भरता जैसे मुद्दों पर अपने आर्थिक विचार दिए। विकेंद्रीकरण, स्वदेशी और अंत्योदय द्वारा दीनदयाल जी मुख्य रूप से समाज के गरीबों, पिछड़ो और वंचितों के उत्थान की बात करते है।

समावेशी विकास एक रणनीति या अवधारणा है जो मुख्य रूप से अर्थव्यवस्था के सबसे निचले स्तर पर रह रहे लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान कर उनके आय स्तर को बढ़ाकर, उनके जीवन के गुणवत्ता में सुधार करके उन्हें विकास के मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास करता है।

दीनदयाल जी के आर्थिक विचार और समावेशी विकास दोनों का ही मानना है कि समाज के निचले तबके के लोगों को विकास के मुख्य धारा से जोड़कर ही सही मायने में देश का आर्थिक विकास किया जा सकता हैं।

Key words- **एकात्म मानववाद, विकेंद्रीकरण, स्वदेशी, अंत्योदय, आर्थिक विकास, समावेशी विकास, जीवन की गुणवत्ता।**

एकात्म मानववाद-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का विचार दर्शन
'एकात्म मानववाद' के नाम से जाना जाता है।
यह दर्शन मानव को एकात्म अथवा समग्र रूप में देखता है और उनके शाश्वत सुख और कल्याण की बात करता है।
दीनदयाल जी का मानना था कि भारत और भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए न पूंजीवाद सही है और न ही समाजवाद। हमारे देश के लिए एकात्म मानववाद की विचारधारा ही उपयुक्त है। यह विचारधारा कोई नयी विचारधारा नही है बल्कि हमारी सनातनी अर्थव्यवस्था की जो विशेषताएं थी, उसी का युगानुकूल रूप है। इस दर्शन का केंद्र बिंदु ही मानव है और मानव का सर्वांगीण विकास।

दीनदयाल जी के प्रमुख आर्थिक विचार-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने अपने विचार दर्शन 'एकात्म मानववाद' के अंतर्गत विभिन्न आर्थिक मुद्दों पर अपने आर्थिक विचार दिए।

दीनदयाल जी मुख्य रूप से कृषि विकास, ग्रामीण विकास, अंत्योदय, विकेंद्रीकरण, स्वदेशी और आत्मनिर्भरता पर अपने आर्थिक विचार दिए है जो बहुत ही महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है।

दीनदयाल जी का विकेंद्रीकरण विचार के अंतर्गत मानना था कि छोटे, लघु व कुटीर उद्योगों पर अधिक से अधिक निवेश किया जाए, इसका अधिक से अधिक प्रसार किया जाए जिससे अधिक लोगों को रोजगार मिलेगा, रोजगार मिलेगा तो उनका आय बढ़ेगा और आय बढ़ने से उनके जीवन की गुणवत्ता बढ़ेगी और वे लोग विकास की मुख्यधारा से जुड़ सकेंगे और सही मायने में आर्थिक विकास होगा।

रोजगार, आर्थिक समानता और सामाजिक न्याय हेतु हमारे देश के लिए केवल भारी उद्योग पर निवेश करना उचित नहीं है। ऐसा नहीं है कि दीनदयाल जी बड़े उद्योगों का विरोध करते हैं बल्कि उनका यह मानना है कि, महत्वपूर्ण वस्तुओं का निर्माण बड़े उद्योग में हो जैसे मोटर गाड़ी, रक्षा उपकरण आदि। उसके बाद अधिक से अधिक उत्पादन छोटे, लघु एवं कुटीर उद्योगों से होना चाहिए क्योंकि हमारा देश श्रम प्रधान है और पूजी की कमी भी है। इन छोटे, लघु उद्योगों में अधिक से अधिक लोगों को रोजगार मिल जाता है।

वर्तमान में यदि देश का समुचित विकास करना है तो बड़े उद्योगों के साथ छोटे, लघु एवं कुटीर उद्योगों को भी बढ़ावा देना होगा।

दीनदयाल जी ने अपने जीवन में स्वदेशी विचारधारा को बहुत महत्व दिए और इसे भारतीय समाज व अर्थव्यवस्था के विकास का आधार माना। स्वदेशी विचारधारा के अंतर्गत दीनदयाल जी का मानना था कि हमें स्थानीय उत्पादों का उपयोग करना चाहिए। विदेशी उत्पादों पर निर्भरता कम करनी चाहिए और स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा देना चाहिए।

स्वदेशी से देश में बड़े उद्योग हो या छोटे, लघु एवं कुटीर उद्योग हो, सभी का विकास होगा।

स्वदेशी के द्वारा छोटे, लघु और कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देकर ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाये जा सकते है।

दीनदयाल जी का अंत्योदय का विचार बहुत ही सहज है। दीनदयाल जी अपने दर्शन एकात्म मानववाद में स्पष्ट करते हैं कि हमारा केंद्र बिंदु मानव है, मानव का सर्वांगीण विकास। अंत्योदय का अर्थ है "सबसे पिछड़े व्यक्ति का उत्थान"। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने इस अवधारणा को अपने विचार दर्शन का केंद्र बनाया। उनका मानना था कि समाज की प्रगति का मापदंड, सबसे कमजोर और गरीब व्यक्ति की स्थिति में सुधार होना चाहिए। अंत्योदय का लक्ष्य समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को उठाना है, जिससे समाज में समरसता और न्याय स्थापित हो। यदि कोई देश बहुत तीव्र आर्थिक विकास कर रहा है परंतु समाज में खड़ा अंतिम पायदान का व्यक्ति का विकास नही हो रहा है या उसकी जीवन स्तर में सुधार नही हो रहा है तो ऐसी विकास किसी काम की नही। आर्थिक विकास होने का तभी मतलब है जब उसका लाभ समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को भी मिले। अर्थात अंतिम व्यक्ति का भी उदय हो, विकास हो। इसी को दीनदयाल जी

अंत्योदय कहते हैं। दीनदयाल जी अंत्योदय में यकीन रखते थे। उनके अनुसार अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का भी विकास होना चाहिए।

आर्थिक विकास की रणनीति-

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में आर्थिक विकास के लक्ष्य को पाने के लिए कुछ रणनीतियां अपनायी जाती है, हमारे देश में मुख्य रूप से आर्थिक सुधार के समय ट्रिकल डाउन स्ट्रेटजी को अपनाया गया, जो यह मानता था कि अधिक से अधिक भारी उद्योगों में निवेश किया जाय जिससे रोजगार बढ़ेगा, उत्पादन बढ़ेगा और राष्ट्रीय आय बढ़ेगा। यह बढ़ी आय नीचे की ओर रोजगार के माध्यम से रिसकर आम जनता, निचला तबका के पास आएगा, जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार होगा। परन्तु इस रणनीति में रोजगार उत्पन्न नही हो पाता है, जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार भी नही हो पाता है।

देश के जो गरीब लोग, पिछड़े लोग, निम्न तबके के लोग, वंचित लोग है उनके जीवन स्तर में सुधार किए बिना हम आर्थिक विकास को नही पा सकते। इनके जीवन स्तर में सुधार करने और आर्थिक विकास को पाने के लिए एक दूसरी रणनीति अपनाई गयी, जिसको समावेशी विकास कहा गया।

समावेशी विकास-

समावेशी विकास (Inclusive Growth) एक ऐसी आर्थिक अवधारणा या रणनीति है, जिसमें आर्थिक विकास के लाभ समाज के सभी वर्गों, मुख्य तौर पर गरीब, पिछड़े और हाशिए पर पड़े लोगों तक समान रूप से पहुँचता हैं। जिससे गरीबी और असमानता कम होती है और ये विकास की मुख्य धारा से जुड़ते है। इस रणनीति के तहत सरकार समाज के गरीब, पिछड़े, वंचित और निम्न तबके लोगों के लिए भिन्न भिन्न योजनाओं के माध्यम से प्रत्यक्ष रोजगार या अवसर मुहैया कराती है, जिससे उनकी आय बढ़ती है और जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है। हमारे देश में इसकी शुरुआत मुख्यतः 11वीं पंचवर्षीय योजना (2007-2012) के दौरान हुयी। यह 'सबका साथ, सबका

विकास' के मंत्र के साथ गरीबी उन्मूलन, सामाजिक न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य और वित्तीय समावेशन के माध्यम से भारतीय अर्थव्यवस्था के सतत विकास और सशक्तिकरण का आधारस्तंभ हैं।

तुलनात्मक अध्ययन-

दीनदयाल जी अपने आर्थिक विचार विकेंद्रीकरण, स्वदेशी और अंत्योदय के अंतर्गत इस बात पर जोर देते है कि अर्थव्यवस्था में छोटे, लघु व कुटीर उद्योगों का विकास करने से, स्थानीय वस्तुओं के उपयोग को बढ़ाने से अधिक से अधिक लोगों को रोजगार मिलेगा, आय बढ़ेगा, उनके जीवन स्तर में सुधार होगा। समाज के जो गरीब, पिछड़े, निम्न तबके के लोग है, वो विकास की मुख्य धारा से जुड़ सकेंगे। तभी समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति का उत्थान होगा, अंत्योदय होगा, तब सही मायने में आर्थिक विकास होगा।

समावेशी विकास के तहत भी मुख्य रूप से समाज के गरीब, पिछड़े, वंचित लोगों को योजनाओं के माध्यम से रोजगार, अवसर प्रदान करके उनके जीवन स्तर में सुधार करने का प्रयास किया जाता है, जिससे वे विकास की मुख्य धारा से जुड़ सके, उनका विकास हो सके।

निष्कर्ष-

दीनदयाल जी के आर्थिक विचार और समावेशी विकास की अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन करने पर निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि दीनदयाल जी के आर्थिक विचार कुछ और नहीं बल्कि समावेशी विकास ही हैं, जो गरीब, पिछड़े, निम्न तबके के लोगों के विकास की बात करता है, उनके जीवन स्तर में सुधार की बात करता है।

वर्तमान में एकात्म मानववाद दर्शन को आत्मसात करके समावेशी विकास को पाया जा सकता है, तब सही मायने में देश का आर्थिक विकास होगा।

संदर्भ-

1. उपाध्याय, दीनदयाल (1958). भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा. लखनऊ: राष्ट्रधर्म प्रकाशन.

2. उपाध्याय, दीनदयाल (1972). राष्ट्रचिंतन. लखनऊ: राष्ट्रधर्म प्रकाशन.

3. उपाध्याय, दीनदयाल (1979). राष्ट्रजीवन की दिशा. लखनऊ: लोकहित प्रकाशन.

4. उपाध्याय, दीनदयाल. एकात्म मानववाद. नई दिल्ली: भारतीय जनसंघ कार्यालय.

5. उपाध्याय, दीनदयाल (1991). एकात्म मानव दर्शन (दीनदयाल उपाध्याय, माधव सदाशिव गोलवलकर, दत्तोपंत ठेंगड़ी, तृतीय संस्करण). नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

6. ठेंगड़ी, दत्तोपंत (1991). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: व्यक्ति दर्शन खंड- 1: तत्व जिज्ञासा. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

7. कुलकर्णी, शरद अनन्त (2014). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: विचार दर्शन खंड-4: एकात्म अर्थनीति. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

8. पाठक, विनोद चंद्र (2009). पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिन्तन. नई दिल्ली: प्रकाशक- आर. डी. पाण्डेय, सत्यम पब्लिशिंग हाऊस.

9. गुप्त, बजरंग लाल (2014). दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म अर्थ चिंतन. मीडिया-विमर्श.

10. लाल, एस. के. और एस. एन. लाल.(2016). भारतीय अर्थव्यवस्था: सर्वेक्षण तथा विश्लेषण. शिवम पब्लिशर्स, इलाहाबाद.

11. विश्वनाथन, वृंदा और संजना शर्मा.(2018). समावेशी विकास और महिलाएं. योजना.

12. अमर उजाला.(2018). समावेशी विकास की चुनौती.